International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2015; 2(1): 406-408

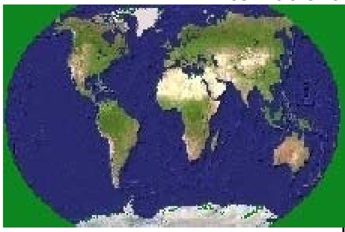

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 2(1): 406-408
www.allsubjectjournal.com
Received: 11-12-2014
Accepted: 25-01-2015
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact factor: 3.762

डॉ० किरण ग्रोवर
एसो० प्रो०, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,डी .ए.वी .कॉलेज,अबोहर।
चलभाष–094783–20028, भारत

Correspondence:
डॉ० किरण ग्रोवर
एसो० प्रो०, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,डी .ए.वी .कॉलेज,अबोहर।
चलभाष–094783–20028, भारत

मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' में विमर्शवादी मीमांसा की संकल्पना

डॉ० किरण ग्रोवर

सारांशः–सच्चा साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। साहित्य के सन्दर्भ में विमर्शवादी मीमांसा की संकल्पना आधुनिक काल की देन है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। मैत्रेयी पुष्पा जी ने विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, शिक्षा विमर्श, सेक्स विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन अपने 'चाक' उपन्यास में किया है। मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास में विमर्श के विभिन्न पहलुओं में उत्तर आधुनिकता के लक्षणों का विस्तार, सारंग के व्यवहार में नारी विमर्श का आक्रामक कदम, सैक्स विषयक बन्धनों से जीवन में तनावपूर्ण स्थिति, स्कूलों को राजनीति का केन्द्र, मूल्यजीवी अध्यापकों से दुर्व्यवहार आदि में विमर्शमूलक वैचारिकता की प्रस्तुति मिलती है। संवेदनशील पाठक जीवन विकास की दिशाओं को पा कर उत्कर्ष का रास्ता खोजने की दृष्टि भी प्राप्त कर सकता है।

बीज शब्दः– मैत्रेयी पुष्पा, चाक, विमर्शवादी मीमांसा, समाजीकृत, संकल्पना।

मूल प्रतिपादनः–श्रेष्ठ साहित्य वही होता है जो अपने भीतर बाहर सार्वभौमिक मूल्यों, सन्देशों व उद्देश्यों को समाहित किये रखता है क्योंकि साहित्य सार्वकालिक, सार्वदेशिक व सार्वभौमिक होता है। सच्चा साहित्यकार अपनी वैयक्तिकता को पिघला कर उसे समाजीकृत रूप में प्रस्तुत करता है। वैयक्तिकता को निर्वैयक्तिकता में परिणित करना ही कला है जो पाठकों को मुत्रमुग्ध करती है। समय के सच को उजागर करने के साथ गुणात्मक साहित्य सदैव प्रासंगिक रहता है तथा जन मानस को आलोक प्रदान करने के साथ दिशा निर्देश भी देता है। साहित्य में 1960 के बाद विमर्श की अवधारणा दृष्टिगत होती है। साहित्य के सन्दर्भ में विमर्शवादी मीमांसा की संकल्पना आधुनिक काल की देन है।

विमर्श शब्द सोच विचार, विचार–विनिमय, चिन्तन मनन को द्योतित करता है। वास्तव में किसी विषय विशेष के सन्दर्भ में गंभीरता से चिन्तन, मनन, विवेचन, विचार विनिमय व सोच विचार करना विमर्श कहलाता है। विमर्श ही समकालीन उपन्यासों की शक्ति है। विगत दो दशकों से विमर्श की संकल्पना साहित्य मीमांसा में प्रयुक्त हो रही है। विविध विमर्शमूलक विचारों का अंकन हिन्दी के समकालीन उपन्यासों में विस्तार से हुआ है। [1] आधुनिक काल में विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, झुग्गी झोंपड़ी विमर्श, आदिवासी विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, सत्ता विमर्श, शिक्षा विमर्श, सेक्स विमर्श, श्रमिक विमर्श, बाज़ार विमर्श, पंजाबी संस्कृति विमर्श आदि का समकालीन उपन्यासों में विश्लेषण किया गया है।

हिन्दी महिला कथाकारों की सशक्त पीढ़ी है जिन्होंने अपने रचना संसार को विविध विमर्शमूलक विचारों से सुसज्जित किया है। उपन्यास साहित्य के सन्दर्भ में मैत्रेयी पुष्पा का योगदान अविस्मरणीय है जिन्होंने यथार्थधर्मिता के धरातल पर अनुद्घाटित आयामों को खोलकर अपनी विचारधारा को पाठकों के समक्ष सम्प्रेषित किया है। [2] मैत्रेयी जी ने जीवन की उन समस्याओं को रेखांकित किया है जो गहन यथार्थ बोध के साथ भावनाओं के सहज उच्छ्लन, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का शमन करके संवेदनात्मक धरातल का संस्पर्श करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा जी ने विमर्शवादी अवधारणा के अन्तर्गत उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, विखंडन विमर्श, शिक्षा विमर्श, सेक्स विमर्श का प्रभावशाली चिन्तन अपने 'चाक' उपन्यास में किया है जिसका विवेचन इस प्रकार है–

उत्तर आधुनिक विमर्शः– उत्तर आधुनिक विमर्श मूलतः 20 वीं शती के उत्तरार्द्ध की देन है। उत्तर आधुनिकतावाद पूर्वाधुनिक व आधुनिक दोनो तरह की अवधारणाओं को चुनौती देता है व विखंडित भी करता है। वह इनके द्वारा कमाए गए सत्यों को समस्यापूर्ण बनाता है। समस्यापूर्ण बनाना ही सिद्धान्त की उत्तर आधुनिकता है। ल्योतार उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता का ही विस्तार मानते हैं। रंडेल के मत में उत्तर आधुनिक क्षण एक साथ समझौते का क्षण है व एक साथ संघर्ष का क्षण है। [3] उत्तर आधुनिकता के सूचना निर्मित सम्बन्ध सन्दर्भों और सम्बन्धों की उत्तर आधुनिक के सम्बन्ध व्यावहारिक होते हैं, सभंग होते हैं, विपद्ग्रस्त होते हैं, असुधार्य होते हैं, विडम्बनात्मक होते हैं। व्यावहारिकता उत्तर आधुनिक सम्बन्धों का सार है। उत्तर आधुनिकता के विषय में राघवेन्द्र प्रताप सिंह जी ने लिखा है कि उत्तर आधुनिकता किसी एक दार्शनिक के प्रति नहीं बल्कि सम्पूर्ण आधुनिक यूरोपीय दर्शन के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया है। उत्तर आधुनिकता के लक्षण के रूप में अतियथार्थता, बिखराव, टूटन, विखंडन, विघटन, आधा अधूरापन, विकास तथा विनाश, कुँआरा मातृत्व, अनिश्चितता, आत्मनिर्भरता, अजनबीपन,अपूर्णता आदि को रेखांकित किया जाता है। उत्तर आधुनिकता भले ही भारतीय सभ्यता व संस्कृति की विचारधारा नहीं है किन्तु हमारे समाज के अनुरूप न होने पर भी पश्चिम में स्थित इसकी जड़ें अपनी शाखाओं का फैलाव हम तक पहुंचा रहें हैं। [4] 20 वीं शती के अन्तिम दो दशकों में उत्तर आधुनिक विमर्श को हमारे उपन्यासों में अभिव्यक्ति मिली।

वर्तमान समय में स्त्री की आत्मनिर्भरता व पश्चिमी सभ्यता के प्रभावस्वरूप बिना विवाह के सम्बन्ध, बच्चे पैदा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। नारी विवाह बिना अपनी प्राकृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जब सम्बन्धों का निर्वाह करती है तो समाज में निन्दा का पात्र बनती है। मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास में उत्तर आधुनिक वैचारिकता का चिन्तन मिलता है। इस उपन्यास की पात्र रेशम बिना विवाह किये गर्भ धारण करती है। सारंग की फुफेरी बहन रेशम के अनुचित व्यवहार के विषय में सोचना सारंग के पति को अनर्गल प्रतीत होता है। वह अपनी पत्नी सारंग से कहता है कि ''जो औरत बिना आदमी के बच्चे पैदा करने का दमखम रखती है। वह क्या क्या नहीं कर सकती। तुम हो कि उसकी चिन्ता में घुली जा रही हो।'' [5] इस प्रसंग में रंजीत का कथन भारतीय मानसिकता को द्योतित करता है कयोंकि भारतीय समाज में अविवाहिता को माता के रूप में देखना अरूचिकर लगता है।

चाक उपन्यास ग्रामीण समाज की पृष्ठभूमि पर आधारित है परन्तु उत्तर आधुनिकता की प्रवृत्ति से असम्पृक्त नहीं है। सारंग और रंजीत गांव की दुश्मनी के कारण बेटे चन्दन को अपने रिश्तेदारों के यहां शहर भेज देते हैं। रंजीत अपनी पत्नी सारंग से गांव की ज़मीन बेचकर आगरा में व्यवसाय करने की सलाह देता है। सारंग शहर के अजनबीपन, परायेपन, आत्मकेन्द्रित वृत्ति से परिचित है। सारंग गांव और शहर की मानसिकता का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहता हैः–''शहर में पड़ोसी तक नहीं जानता कि पास वाले मकान में आदमी रहते हैं या मुर्गियां, डाकू या सन्त। कोई रात को चोरी करे या आरती गाये किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। दूसरों की तहकीकात पर तो गांव में लोग जुटे रहते हैं।'' [6] इस कथन से प्रतिध्वनित होता है कि शहर में उत्तर आधुनिकतावादी विचारों से युक्त वातावरण पनपता जा रहा है।

स्त्री विमर्शः– सदियों से शोषण व दमन के प्रति स्त्री चेतना ने स्त्री विमर्श को जन्म दिया। स्त्री विमर्श वास्तव में आत्म चेतना, आत्म सम्मान, आत्म गौरव, समता व समानाधिकार की पहल का नाम है। स्त्री विमर्श स्त्री की अस्मिता का, आत्म–चेतना का,अन्याय के विरोध का ,अस्तित्व बोध का, और उसकी अत्याचार के विरोध में खडे रहने की लड़ाकू वृत्ति का न केवल परिचय देता है अपितु स्त्री चिन्तन को बल प्रदान करता है। वर्तमान नारी आर्थिक रूप से स्वयंपूर्ण बनती जा रही है। आत्मगौरव, अस्तित्व बोध, आत्म चेतना, आत्म निर्भरता ने नारी को आत्मविश्वस्त व सशक्त बना दिया है। [7] स्व के प्रति सजगता व अस्तित्व की चेतना स्त्री विमर्श की मुख्य शक्ति है जो हिन्दी उपन्यासों में पर्याप्त मात्रा में लक्षित होती है।

स्त्री कथाकारों ने अपने अनुभवों, आंखों देखी घटनाओं के माध्यम से सड़ी गली सामाजिक व्यवस्था पर चोट की है व सशक्त स्त्री को रेखांकित किया है। स्त्री चेतना का विकास चाक उपन्यास का विचार तत्व है। वर्तमान काल में नारी विमर्श की जड़ें जो फैलती जा रही हैं। उभरती हुई नारी चेतना को आज भी समाज सांप के फन की तरह देखता है जिसको कुचलने के लिए लाठी का सहारा लिया जाता है। [8] स्त्री की अस्मिता से समाज परेशान हुए बिना नहीं रह सकता। समाज में सचेतन नारी के प्रति आज भी दकियानूसी दृष्टि रही हो फिर भी नारी अपने दमखम के साथ निर्णय पर अटकी रही है। भौतिकतावाद के दौर में मैत्रेयी जी ने पति–पत्नी के सम्बन्धों में अविश्वास, असन्तोष व विपरीतधर्मिता को भी उल्लिखित किया है।

आजकल गांवों में भी ऐसी स्त्रियां दृष्टिगत होती हैं जो पूरे समाज का, उसकी दकियानूसी मानसिकता का विरोध कर विद्रोह का साहस जुटाने लगी है। मैत्रेयी जी ने अपने अनुभव से सिद्ध किया है कि पति अपनी पत्नी की कोमल भावनाओं को कुचल रहा हो तो पत्नी को पतिव्रत के नियमों का उल्लंघन करना पड़ता है। मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास की नैना सारंग इसकी सशक्त मिसाल है। सारंग अपने पति, परिवार और गांव के मुखिया का विरोध कर घायल मास्टर का साथ देती है तथा चुनाव के लिए स्वयं खड़ी हो कर विरोध का सामना करने के लिए हाथ में बन्दूक उठाने का साहस रखती है। वह स्वयं अपने फैसले लेती है तथा गांव की गुलकंदी को भी अपना जीवन साथी चुनने के लिए प्रेरित करती है। सारंग गुलकंदी को अपने परिवार वालों के सामने बिसुनदेव से शादी करने के निर्णय का इज़हार करने के लिए कहती हैः–''कह देती कि मैंने अपना सुख दुःख खुद ढूंढा है, इसमें दखल देने वाले तुम कौन होते हो।' [9] इस कथन से सारंग के व्यवहार में नारी विमर्श का परिचयात्मक स्वरूप दृष्टिगत होता है। सारंग के यह व्यवहार नारी विमर्श का आक्रामक कदम है। निडरता, खुलापन, साहस, विरोध की क्षमता रखने वाली आक्रामक नारी के रूप में उसका व्यक्तित्व उद्घाटित हुआ है।

सेक्स विमर्शः– सैक्स मानव जीवन की सहज प्रवृत्ति है। शास्त्रों ने चर पुरुषार्थों में से 'काम' को एक पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया है। वस्तुतः भारतीय साहित्य एवं शिल्प कला में काम को ले कर पर्याप्त मात्रा में अभिव्यक्ति मिलती है। स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में सैक्स को ले कर पर्याप्त मात्रा में विचार चिन्तन होने लगा। शिक्षा का प्रचार, पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति से बढ़ते हुए सम्बन्धों के कारण सैक्स जैसा विषय अब अभिव्यक्ति के लिए सहज रूप में स्वीकृत होने लगा है। सैक्स नई पीढ़ी को नई सोच के लिए प्रवृत्त करता है। समकालीन हिन्दी उपन्यासकार सैक्स विषयक घटनाओं, प्रसंगों, समस्याओं व तद्विषयक विचार चिन्तन को ले कर बेबाक लेखन कर रहा है। आज की नारी को भोग व विलास की वस्तु बन कर रहना स्वीकार्य नहीं। [10] अनमेल जीवन साथी के कारण दाम्पत्स जीवन में तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है।वर्तमान कालीन समाज व्यवस्था में न केवल पुरुषों में अपितु स्त्रियों में भी सैक्स को ले कर खुलापन पनपता जा रही है। सैक्स अपराध को और गुनहगारी को भी जन्म देता है। आधुनिक परिवेश ने सैक्स को एक ओर बाजारू बना दिया हैतो दूसरी ओर परम्परागत रूढ़ियों से लड़ने का हथियार भी।

भारतीय पुरुष अपनी पत्नी से वफ़ादारी चाहता है, वह उसमें यौन शुचिता व दैहिक शुद्धता की आकांक्षा रखता है। जब स्त्री किसी अन्य पुरुष से यौन सम्बन्ध स्थापित करती है तो वह शैतान बन जाता है। चाक उपन्यास की नैना सारंग अपनी बड़ी बहू को यही समझाती हैः–'' जाटों को अगर पता चल जाता है कि उनकी बहू–बेटी के संग कौन था, तो वे उस मर्द की गर्दन पहले उड़ा देते हैं। औरत से सवाल पीछे करते है।'' [11]

स्त्री का पर पुरुष से बातें करना पति के मन में सन्देह पैदा करता है। इस सन्देह से अनेक पत्नियों की हत्याएं हुई हैं। सैक्स ही झगड़ों, अपराधों व हत्याओं का कारण बनता है। सैक्स मूलतः सहज प्रवृति है। बन्धनों की प्रतिक्रिया कहीं कहीं विपरीत स्थिति को जन्म देती है।समाज सैक्स के सम्बन्ध में कड़े कानून बनाता है, कभी –कभी उनका उतना ही कड़ी प्रतिक्रिया दिखाई देती है। चाक उपन्यास में गुरुकुल की लड़कियां कड़े बन्धनों के कारण उब जाती ह, उनके मन में जिज्ञासा भाव तीव्र रूप ग्रहण करता है–'' [12] लेकिन सदाचार, शिष्टाचार व ब्रह्मचर्य के कठिन व्रत से ज्यादातर लड़कियां उब चुकी थी। वे सब यह भी जानती थीं कि उनके ब्याह करने वाले अनाचारी पिता, स्वार्थी माता तथा ऐसे ही संसारी संरक्षकों और भ्रष्ट व झूठी जै–जैकार में लीन लिप्त माताजियों के पांवों तले मजबूर होकर पड़ी हैं। जब ऐसी पराधीनता आती है या तो आदमी दीन हो जाता है,या फिर विद्रोही। इस कथन से स्पष्ट है कि लड़कियों पर जितने बन्धन डाले जाते हैं उससे वे दीन या विद्रोही बन जाती हैं। सैक्स विषयक बन्धनों से जीवन में सहजता की अपेक्षा तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो जाती है।

सैक्स का उपयोग कभी–कभी मुआवज़े के लिए तो कभी प्रतिशोध के लिए भी किया जाता है। चाक उपन्यास की सारंग इसका प्रमाण है। वह पति के क्रोध के कारण पर पुरुष श्रीधर को रति सुख से आनन्दित भी करती है तो दूसरी ओर पति से श्रीधर की बेरहमी पूर्ण करवाई गई पिटाई का प्रतिशोध भी लेती है। स्वयं सारंग के शब्दों में :–'' श्रीधर अगर तुम्हारी आंखें इस देह को देखकर आनन्द पाती हैं। तो जी भरकर देखो मुझे। मेरा देह धरना सुकारथ हो गया। परस से तुम्हारे घाव सिराते हैं तो छुओ न मेरी सुन्दरता सार्थक हुई।' [13] इस कथन से स्पष्ट है कि सारंग साहसी नारी के रूप में पर पुरुष को देह समर्पित करने में सार्थकता महसूस करती है तथा दूसरा ओर विवाहिता स्त्री होने के नाते पति के विश्वासघात का प्रतिदान अदा करती है। सारंग द्वारा सैक्स को मुआवज़े के रूप में ग्रहण करने पर रंजीत के पिता अपने बेटे को समझाते हैं:–''तू मास्टर के संग घात न करता रंजीत, तो सारंग इसका मुआवजा न भरती।'' [14] रंजीत के पिता का कथन नारी के सैक्स विषयक व्यवहार का परिचय देता है। सैक्स भले ही सहज सुलभ प्रवृत्ति है परन्तु उसमें बदनामी बर्दाश्त नहीं होती।

शिक्षा विमर्शः– शिक्षा जीवन विकास का मुख्य साधन है।व्यक्ति, समाज, राष्ट का उत्थान शिक्षा के बलबूते पर ही संभव होता है। शिक्षा का प्रधान उद्देश्य है– व्यक्ति का सर्वांगीण विकास। शिक्षा के माध्यम से शारीरिक, मानसिक,भावात्मक, बौद्धिक एवम् चारित्रिक दृष्टि से शिक्षार्थी का विकास आपेक्षित होता है। व्यक्ति सम्बन्धी गहन चिन्तन ही मूलतः शिक्षा विमर्श है। शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न आयामों का सोच विचार, विवेचन विश्लेषण, तद्विषयक समीकरण हुआ करता है, वह शिक्षा विमर्श कहलाता है। शिक्षा के प्रचार प्रसार के अभियान में राधा कृष्ण आयोग,कोठारी आयोग की स्थापना कर शिक्षा विषयक नीति का निर्धारण किया जाता है। शिक्षा की बहुआयामी अभिव्यक्ति समकालीन उपन्यासों में प्रखरता से परिलक्षित होती है। [15] हिन्दी उपन्यासों में शिक्षा जगत की नई समस्याओं का उनके उत्थान व पतन का ईमानदारी के साथ उद्घाटन किया जाता है। शिक्षा की सुविधा भारत की महती उपलब्धि है। वर्तमान जगत में परीक्षा व्यवस्था अव्यवस्था व अनाचार में बदल गई है। अध्यापकों का शोषण शिक्षा के क्षेत्र को और भी दयनीय बना देता है।

स्कूलों व कॉलेजों का दुरूपयोग करने की प्रवृत्ति आज आम बात लगती है। शैक्षिक संस्थाओं का उपयोग अब राजनीतिक स्वार्थ हथियाने के लिए किया जाता है। मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में ग्राम प्रधान व थाना सिंह का ही अधिकार चलता है। उनका आतंक स्कूल के अध्यापकों पर भी छाया हुआ है। उनकी नीति का विरोध करने वाला कोई भी अध्यापक स्वस्थ जीवन नहीं जी सकता। अतरपुर गांव को ले कर यह तथ्य द्रष्टव्य हैः–''इस गांव से कई मास्टर पिटकर गये हैं, या पिटते पिटते रह गये हैं।'' [16] गांव की राजनीति व गुण्डागर्दी ने स्कूल का वातावरण दूषित कर दिया है। अध्यापकों को छात्रों के बौद्धिक विकास के लिए अनुशासन के प्रति विशेष ध्यान देना पड़ता है। कभी किसी छात्र को कोई अध्यापक दंडित व प्रताड़ित करता है, तो उसके घर वाले अध्यापकों की ही दुर्गति करने लगे हैं। चाक उपन्यास में अध्यापकों के साथ छात्रों के परिवार वालों का व्यवहार इस प्रकार हैः–''मौलवी साहब ने धुंधी के लड़के को मारा थाएक बार, बदले में पिटने वाले लड़के क बडे ़भाई ने मौलवी साहब की दाड़ तोड़ का बदला पूरा किया था।–––बेचारे नेरातों रात मूंछें मुंडवा ली।सवेरे स्कूल में पहुंचे, किसी ने पहचाना नहीं। हल्ला हुआ कि नये मास्टर जी आ गये।'' [17] इस कथन से स्पष्ट है कि छात्रों के उन्नयन के लिए

प्रयासरत अध्यापकों के साथ अभिभावकों की ओर से दुर्व्यवहार किया जा रहा है।

स्कूल वस्तुतः वह जगत है जहां ज्ञानदान का पवित्र कार्य किया जाता है। गांव के लोगों द्वारा स्कूल की संस्था का विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग पवित्र स्थान को विषैला करने जैसा है। स्कूल कर्मचारियों के लिए चिंता का विषय है। चाक उपन्यास में अतरपुर गांव के लोगों द्वारा स्कूल की इमारत का विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग होता है तथा राजनीति का केन्द्र भी बना हुआ है। जैसे–'' स्कूल का काम बहुआयामी है। बारात घर,पंचायत घर,मेहमान घर,दावत घर,प्रधान जी अगर फसल समय पर न बेचना चाहें तो बीजगोदाम भी। आज–कल स्कूल राजनीति का मोहरा बना हुआ है। भंवर जैसे युवक भी यही कहते हैं।'' [18] इस कथन से सिद्ध होता है कि ग्राम प्रधान व राजनयिकों ने स्कूलों व कॉलेजों की इमारतों का गोदाम के रूप में उपयोग किया है व राजनीति का अखाड़ा भी बना दिया है।कभी स्कूल में स्थानीय लोग अध्यापक होते हैं तो उस गांव का राजनीति भयंकर मोड़ ले लेती है। चाक उपन्यास में यही स्थिति दृष्टिगत होती हैः–––''आज कल स्कूल रणक्षेत्र हैं। हेडमास्टर थानसिंह युद्ध का बिगुल वहीं से फूंक रहे थे।'' [19] इस कथन से स्पष्ट होता है कि केवल गांव के लोग ही नही तो थानसिंह जैसे हेडमास्टर भी स्कूल को राजनीति का केन्द्र बनाते हैं और इस क्षेत्र की पवित्रता को खण्डित कर देते हैं।

यदि कोई अध्यापक ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य निभाता है तो वह लोगों के विक्षोभ का कारण बनता है। मूल्यजीवी अध्यापकों की कभी कभी पिटाई भी हुआ करती है।इस उपन्यास के मास्टर श्रीधर शिक्षा का अर्थ बताते हैं :–मर्दों के कुसंस्कारों और अहं की अशिक्षा को मिटाना और निजी स्वार्थों से मुक्त करना।'' [20] निष्ठा से अपने कर्त्तव्य की पूर्ति करने वाले मास्टर श्रीधर की बुरी तरह पिटाई भी होती है। स्वाधीन भारत में शिक्षा का विकास सबको समानावसर प्रदान करता दृष्टिगत हुआ है किन्तु अंग्रेज़ी स्कूलों में पराधीनता, मनमानी वृत्ति, देशप्रेमी छात्रों के साथ दुर्व्यवहार तथा अन्याय भी दृष्टिगत होता है।

महिला कथाकारों की सशक्त पीढ़ी में मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास में विभिन्न वर्ग, समाज, विषय, विचार चिन्तन व स्थिति को केन्द्र बिन्दु में रखकर विमर्शमूलक वैचारिकता का उद्घाटन किया गया है। उत्तर आधुनिक विमर्श, स्त्री विमर्श, सैक्स विमर्श, शिक्षा विमर्श, की अवधारणा ने मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास में विमर्श के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया है जिससे स्पष्ट होता है कि इस उपन्यास में विमर्शमूलक वैचारिकता की प्रस्तुति सहजता में मिलती है। विमर्शमूलक वैचारिक चिन्तन से वैयक्तिक, सामाजिक, वैश्विक उन्नयन की दिशाएं स्पष्ट हो जाती है व समकालीन समाज को पहचानने व सामाजिक समस्याओं के हल प्राप्त हो सकते हैं। संवेदनशील पाठक जीवन विकास की दिशाओं को पा कर उत्कर्ष का रास्ता खोजने की दृष्टि भी प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2008।

2 क्षमा शर्मा, स्त्रीत्ववादी विमर्शः समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002।

3 देवशंकर नवीन, उतर आधुनिकताः कुछ विचार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2000।

4 सुधीश पचौरीः उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श,वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2005।

5 मैत्रेयी पुष्पा, चाक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997।

6 वही, पृ॰ 52 –53

7 मैत्रेयी पुष्पा–खुली खिडकियां,सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006।

8 क्षमा शर्मा, स्त्रीत्ववादी विमर्शः समाज और साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002।

9 मैत्रेयी पुष्पा, चाक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ॰ 354।

10 अर्जुन चव्हाण, विमर्श के विविध आयाम, पृ

11 मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ॰ 70

12 वही, पृ॰ 88

13 वही, पृ॰ 329

14 वही, पृ॰ 331

15 गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2002।

16 मैत्रेयी पुष्पा, चाक, पृ॰179

17, वही, पृ॰179

18 वही, पृ॰ 30

19 चाक पृ॰ 31

20 चाक पृ॰ 245

Net Sources

1 http://www.rachanakar.org/2013/10/blog-post_3894.html

2 maitreyipushpa.com/career.html

3 pustak.org/home.php?bookid=3375

4www.nomadit.co.uk/easas/ecsas2012/panels.php5?PanelID =1002